विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, आश्विन पूर्णिमा 5 अक्टूबर, 2017, वर्ष 47, अंक 4

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अस्सद्धो अकतञ्ञू च, सन्धिच्छेदो च यो नरो।
हतावकासो वन्तासो, स वे उत्तमपोरिसो॥
धम्मपदपालि- ९७, अरहन्तवग्गो

जो नर (अंध-) श्रद्धारहित, निर्वाण का जानकार, (भव-संसरण की) संधि का छेदन किये हुए, (पुनर्जन्म की) संभावनारहित और (सर्वप्रकार की) आशाएं त्यागे हुए हो, वह निःसंदेह उत्तम पुरुष होता है।

प्रथम गृहस्थ विपश्यनाचार्य सया तैजी

(1873-1945)

(.... "सया तैजी ने रंगून के समीप इरावदी नदी के पार डल्ला नामक गांव में विपश्यना का केंद्र स्थापित किया और अपने जीवन काल में 1000 से अधिक गृहस्थ और भिक्षुओं को विपश्यना सिखा कर यह सिद्ध कर दिया कि यदि पूर्व-पारमी-संपन्न हो तो एक गृहस्थ भी सफल विपश्यनाचार्य बन सकता है।"...

.... "भारत की यह पुरातन विद्या अपनी जन्मभूमि भारत में और सारे विश्व में पुन: प्रतिष्ठित हो और जन-जन का मंगल करे, जन-जन का कल्याण करे। पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की धर्मकामना सफलीभूत हो!"

कल्याणमित्र, सत्यनारायण गोयन्का.

--उपरोक्त अंश "विपश्यना घर लौटी", "विपश्यना" के वर्ष 23, अंक 8 से साभार

(पूज्य गुरुजी के उपरोक्त शब्दों को ध्यान में रख कर धर्म को अपने जीवन में उतारने का संकल्प करते हुए हम भी उनकी चतुर्थ पुण्य-तिथि पर श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। सं.)

(निम्नलिखित वृत्तांत आंशिक रूप से म्यंमा के एक धर्माचार्य ऊ टेय ह्लांग द्वारा लिखित "सया तै जी" नामक पुस्तक से लिया गया है।)

सया तै जी का जन्म 27 जून 1873 को प्याब्वेजी नाम के एक कृषि प्रधान गांव में हुआ था जो रंगून के दक्षिण में इरावदी नदी के दूसरी ओर आठ मील दूर है। उनका बचपन का नाम था- मौं फो तै। उनके दो छोटे भाई और एक बहन थी। जब वे 10 वर्ष के थे तब उनके पिताजी चार बच्चों के लालन-पालन का भार उनकी मां पर छोड़ कर चल बसे।

उनकी मां दूधी (लौकी) के पकौड़े और पे-याजो बना-बेच कर परिवार का भरण पोषण करती थी। बचपन में उन्हें बचे हुए पकौड़े/पे-याजो बेचने गांव में भेजा जाता, पर वे अक्सर बिना कुछ बेचे वापस आ जाते थे क्योंकि वे शरम के मारे आवाज देकर अपनी चीजों के प्रति लोगों को आकर्षित नहीं कर पाते थे। इसलिए उनकी मां दो बच्चों को भेजने लगी; मौं फो को पकौड़ों से भरी ट्रे सर पर ले जाने, और उनकी बहन को आवाज देने के लिए।

चूंकि उन्हें परिवार के भरण-पोषण में सहयोग करना था, उनकी विधिवत शिक्षा बहुत कम रही-- केवल छठी कक्षा तक। उनके पास कोई खेती की भूमि नहीं थी अतः वे फसल कटने के बाद औरों के खेत के बचे हुए डंठलों व अनाज को इकट्ठा करते थे। एक दिन खेत से घर लौटते समय मौं फो ने कुछ छोटी मछलियों को एक सूख रही तलैया में छटपटाते पाया तो उन्हें गांव के तालाब में छोड़ने के उद्देश्य से लेकर घर पहुँचे। मछलियों को पकड़ने के अपराध में मां उन्हें पीटने दौड़ी, लेकिन उनका आशय सुन कर बोली-- "साधु, साधु, साधु!" (बहुत अच्छा किया बेटा!)। उनकी मां एक सहृदय एवं दयालु महिला थी जो कभी डांट-डपट तो नहीं करती थी लेकिन कोई अकुशल कर्म भी नहीं सहन कर सकती थी।

चौदह वर्ष की उम्र में वे धान ले जाने वाली बैलगाड़ी के चालक बने। अपनी दिहाड़ी (दैनिक मजदूरी) लाकर अपनी मां को देते थे। उस समय वे इतने छोटे थे कि उन्हें गाड़ी पर चढ़ने-उतरने के लिए एक खास बक्सा साथ में रखना पड़ता था।

प्याब्वेजी गांव एक समतल उपजाऊ भूमि पर स्थित है जिसकी सिंचाई इरावदी नदी में मिलने वाली उपनदियों से होती है। जब चावल के खेत बाढ़ में डूब जाते हैं और नौपरिवहन एक समस्या होती है, तब आवागमन का एक साधारण जरिया "संपण" है (लंबी समतल नाव)। मौं फो का दूसरा काम संपण मल्लाह का था। इस छोटे बच्चे को धान ले जाते और लगन व उत्साह से काम करते देख कर किसी स्थानीय चावल मिल के मालिक ने 6 रूपये प्रतिमाह वेतन पर मिल में 'क्लर्क' की नौकरी दे दी। इस अवधि में वे मिल में अकेले रहते और मटर के पकौड़े, चावल आदि रूखा-सूखा खाकर गुजर बसर करते थे।

प्रारंभ में वे भारतीय चौकीदार या अन्य श्रमिकों से चावल खरीदते थे। उन लोगों ने उनसे कहा कि वे मिल की सफाई करते हुए अवशिष्ट चावल (धान कूटने के बाद जमीन पर गिरे टूटे चावल = कनी) को बटोर कर अपना काम स्वयं चला सकते हैं जो कि सुअर या मुर्गियों के लिए दे दिया जाता है। मौं फो ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि वे मालिक की अनुमति के बिना चावल के टुकड़े भी नहीं लेंगे। मालिक ने जब यह सुना तो अनुमति दे दी। लेकिन ऐसा चावल उन्हें अधिक दिन नहीं खाना पड़ा। मेहनती, लगनशील और निष्ठावान कामगार होने के कारण संपण और बैलगाड़ी के मालिक उनको अच्छा चावल देने लगे। फिर भी वे अवशिष्ट चावल इकट्ठा करते रहे और उन निर्धन गांववासियों को देते रहे जो स्वयं चावल नहीं खरीद पाते थे।

मिल में एक वर्ष होते-होते उनका वेतन दस रुपये तक बढ़ गया था और फिर दो वर्ष बाद पंद्रह हो गया था। मिल-मालिक ने उन्हें अच्छे चावल खरीदने हेतु पैसे एवं प्रतिमाह परिवार हेतु सौ टोकरी धान कुटवाने की भी अनुमति दे दी। अब उनका वेतन बढ़कर पच्चीस रुपया हो गया, जिससे उनकी मां को बहुत सहायता मिली।

प्रचलित प्रथा (= सोलह वर्ष में शादी, और उसके बाद लड़का ससुराल जाता है, न कि लड़की) के अनुसार सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह मा म्हिन से हो गया। उनकी पत्नी एक संपन्न भूमिधर किसान एवं धान के व्यापारी की तीन पुत्रियों में से एक (बीच की) थी। इस प्रकार वे अपनी पत्नी के मां-बाप और उसकी बहनों के साथ बड़े संयुक्त परिवार में रहने लगे। उनके दो बच्चे हुए-- एक बेटा और एक बेटी। उनकी पत्नी की छोटी बहन मा यिन कुँआरी ही रही और सफलतापूर्वक अपना एक छोटा-सा व्यापार करने लगी। आगे चल कर अपनी ध्यान साधना करने तथा सिखाने में ऊ फो तै को इनसे बड़ी सहायता मिली।

मा म्हिन की बड़ी बहन मा खिन ने कोकाए से शादी की और मौं न्यूं नामक पुत्र को जन्म दिया। कोकाए ने परिवार से जुड़ कर खेती बाड़ी और व्यापार संभाल लिया तो ऊ फो (बर्मा में बचपन से किशोर वय तक को 'मौं' कहते हैं और उसके बाद वालों को 'ऊ' यानी, श्री या श्रीमान से संबोधित किया जाता है।) ने धान के व्यापार को बहुत आगे बढ़ाया

मौं फो को "सामणेर" बनने का अवसर नहीं मिला था (कुछ दिन के लिए सामणेर की दीक्षा लेना बर्मा में एक सामान्य और महत्त्वपूर्ण प्रथा है)। उनका भांजा/भतीजा मौं न्यूं जब 12 वर्ष की उम्र में सामणेर बनने लगा तब वे भी सामणेर बन गये और बाद में कुछ समय के लिए भिक्षु भी बने थे।

तेईस वर्ष की उम्र में ऊ फो तै एक गृहस्थ आचार्य सया न्यूं के पास ध्यान सीखने गये। वहां उन्होंने आनापान सीखा और सात वर्ष तक इसी का अभ्यास करते रहे।

ऊ फो और उनकी पत्नी के अनेकों मित्र और सगे-संबंधी उसी गांव में रहते थे। इस प्रकार दोनों ससुराल पक्ष के सब लोग यानी, चाचा-चाची, भतीजे-भतीजियों, चचेरे भाई आदि सब एक साथ सौहार्दपूर्ण तथा संतोषजनक ढंग से सुखपूर्वक रहने लगे।

गांव का शांत और सुखी जीवन 1903 में हैजा के प्रकोप से छिन्न-भिन्न हो गया। गांव के अनेक लोग कुछ ही दिनों में मर गये और कई धीरे-धीरे। इनमें ऊ फो का पुत्र और यौवनावस्था में कदम रख रही पुत्री (कहते हैं उसने इनकी बाहों में प्राण छोड़े) भी शामिल थी। उनका साढ़ूभाई कोकाए और उसकी पत्नी भी बीमारी के शिकार हुए और भतीजी भी (जो उनकी पुत्री के साथ खेलती थी)।

इस विपत्ति ने ऊ तै को गहरा सदमा पहुँचाया और उनका मन अशांत हो गया। उन्होंने इस दुःख से मुक्ति पाने का मार्ग खोजने हेतु अपनी पत्नी, छोटी साली मा यिन और अन्य संबंधियों से शांति की खोज में जाने के लिए अनुमति मांगी।

इस खोज में वे पूरे बर्मा में जगह-जगह भटके। एकांत साधना हेतु पहाड़ियों और अरण्य विहारों में गये। गृहस्थ एवं भिक्षु दोंनों प्रकार के आचार्यों से शिक्षा ग्रहण की। अंत में वे अपने प्रथम आचार्य सया न्यूं के सुझाव के अनुसार भदंत लैडी सयाडो से मार्गदर्शन लेने, उत्तर की ओर मोञ्जेवा गये। उनकी इस यात्रा में उनके साथ एक श्रद्धालु साथी एवं अनुयायी ऊ न्यो भी थे।

इन वर्षों में उनकी इस आध्यात्मिक खोज के दौरान, उनकी पत्नी और मा यिन दोनों प्याब्वेजी में ही रह कर खेती का काम कुशलतापूर्वक संभालती रहीं। प्रारंभ के कुछ वर्ष तक वे कुशल-क्षेम जानने के लिए घर जाया करते थे लेकिन जब पाया कि परिवार संपन्न हुआ जा रहा है तो वे निरंतर ध्यान में लग गये। कुल सात वर्ष वे लैडी सयाडो के साथ साधना का अभ्यास करते रहे। इस बीच उनकी पत्नी और साली परिवार की खेती से होने वाली आय में से उनकी सहायता करती रही।

सात वर्ष बाद जब वे ऊ न्यो के साथ अपने गांव लौटे तब अपने पूर्व जीवन की गृहस्थी में नहीं गये। क्योंकि आते समय भदंत लैडी सयाडो ने उनसे कहा था कि वे लगन के साथ अभ्यास करके समाधि (ध्यान) और पञ्ञा (प्रज्ञा, प्रत्यक्ष स्वानुभूतिजन्य ज्ञान) बढ़ाते जायँ ताकि धीरे-धीरे सिखाना शुरू कर सकें।

उनके कहे अनुसार वे प्याब्वेजी जाते ही डल्ला गांव की परिवारिक भूमि पर बनी "साला" (शाला, फार्महाऊस) में चले गये। इस "साला" का उपयोग वे धम्म-कक्ष के रूप में करने लगे। यहां वे निरंतर ध्यान में मग्न हो गये। इस एकांत साधना के दौरान, दिन में दो बार भोजन बनाने के लिए एक महिला को रखा जो शाला के समीप ही रहती थी।

ऊ तैजी ने एक वर्ष इसी प्रकार गुजारा। उन्होंने ध्यान में त्वरित प्रगति की और अंत में उन्होंने अपने आचार्य के मार्गदर्शन की आवश्यकता समझी। वे लैडी सयाडो से तो संपर्क नहीं कर पाये पर उन्हें पता था कि उनके घर की आलमारी में उनकी कुछ पुस्तकें हैं। इसलिए उन दीपनियों को देखने के लिए वे वहां गये।

इतने वर्ष बाहर रहने के बावजूद घर में वापस नहीं लौटने के कारण उनकी पत्नी और साली मा यिन उनसे नाराज थीं। पत्नी ने तो तलाक तक के बारे में सोच लिया था। जब ऊ फो तै घर की ओर आ रहे थे तब दोनों बहनों ने निश्चय किया कि वे न तो सम्मान प्रकट करेंगी और न स्वागत करेंगी। पर जब वे द्वार पर खड़े हुए तब दोनों अपने आपको स्वागत करने से नहीं रोक पायीं। कुछ देर बात-चीत होने के बाद ऊ फो ने क्षमायाचना की और उन दोनों ने दे भी दी।

दोनों ने उन्हें चाय, भोजन के लिए निमंत्रित किया। उन्होंने पुस्तकें लीं और पत्नी को समझाया कि उन्होंने अब आठ शील लिये हैं और गृहस्थ जीवन में वापस नहीं आयेंगे। अब वे दोनों भाई-बहन की भांति रहेंगे।

पत्नी और साली ने उन्हें सुबह के भोजन के लिए प्रतिदिन आने का निमंत्रण दिया और वे खुशी से उनकी सहायता करने को भी तैयार हुईं। उन्होंने उन दोनों की उदारता के लिए आभार प्रकट किया और कहा कि उन्हें धम्म-दान देकर ही वे उनके अहसानों का बदला चुका पायेंगे।

उनकी पत्नी के चचेरे भाई ऊ बा सो और अन्य संबंधी उनसे मिलने और बात करने आये। दो सप्ताह बाद ऊ तैजी ने कहा कि उनका ज्यादा समय भोजन के लिए आने-जाने में व्यतीत हो रहा है, इसलिए मा म्हिन और मा यिन मध्याह्न का भोजन शाला में ही भेजने लगीं।

प्रारंभ में गांव वाले उनसे शिक्षा ग्रहण करने से कतराते रहे। उन लोगों ने उनकी लगन का गलत अर्थ निकाला था। उनका ख्याल था कि वे विपत्ति के मारे और गांव से दूर रहने के कारण असंतुलित हो गये हैं। लेकिन धीरे-धीरे उनके वार्तालाप तथा आचरण से वे लोग समझ गये कि अब ऊ तै बदले हुए व्यक्ति हैं और उनका जीवन धम्म के अनुरूप है।

ऊ तै के कुछ मित्रों और संबंधियों ने उनसे अनुरोध किया कि वे उन्हें ध्यान सिखायें। ऊ बा सो खेत और घर की जिम्मेदारियों को संभालने के लिए आगे आये। ऊ तै की बहन और भांजी ने भोजन बनाने की जिम्मेदारी ली। यानी, यह शाला विपश्यना केंद्र में बदल गयी।

1914 में, इकतालीस वर्ष की उम्र में, ऊ तैजी ने पंद्रह लोगों को आनापान सिखाने से काम आरंभ किया। सभी साधक "केंद्र" में ही रहते थे और उनमें से कुछ (पुराने साधक) बीच-बीच में घर जाते थे। ऊ तैजी अपने साधकों को तथा बाहर के उत्साही व्यक्तियों को धम्म प्रवचन देते थे। उनके श्रोताओं को ये प्रवचन इतने विद्वतापूर्ण लगते थे कि वे

यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि ऊ तैजी के पास शैक्षिक और सैद्धांतिक ज्ञान की कमी है।

ऊ तै की पत्नी और साली की उदार आर्थिक सहायता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से उनके विपश्यना-केंद्र में आने वाले सभी साधकों के भोजनादि की आवश्यकताओं की आपूर्ति सुचारुरूप से होती थी। यहां तक कि एक बार साधना में आये मजदूरों के वेतन आदि का खर्च भी भर दिया गया।

एक वर्ष ध्यान सिखाने के बाद, 1915 में ऊ तै अपनी पत्नी, साली और परिवार के अन्य सदस्यों को लेकर मोञ्ज्येवा लैडी सयाडो का दर्शन करने गये जो उस समय 70 वर्ष के हो गये थे। जब ऊ तैजी ने अपने ध्यान के अनुभव और उनसे संचालित शिविरों के बारे में बताया तब उसे सुन कर लैडी सयाडो बहुत प्रसन्न हुए।

इस भेंट के समय ही लैडी सयाडो ने अपनी छड़ी ऊ तैजी को देते हुए कहा-- "मेरे होनहार शिष्य, मेरी यह छड़ी ले जाओ। इसे संभाल कर रखो। मैं यह तुम्हें दीर्घायु बनाने के लिए नहीं दे रहा, बल्कि उपहार स्वरूप दे रहा हूं ताकि तुम्हारे जीवन में कोई दुर्घटना न घटे और तुम सफल हो। आज से तुम्हें छः हजार लोगों को 'रूप एवं नाम' (शरीर और चित्त) का धम्म सिखाना है। तुम्हारे पास जो धम्म है वह अशेष है, इसलिए तुम सासन (बुद्ध शासन) की कीर्ति फैलाओ। मेरे स्थान पर तुम 'सासन' को सम्मान दो।"

दूसरे दिन लैडी सयाडो ने अपने विहार के सभी भिक्षुओं को बुलाया। उन्होंने ऊ तै से अनुरोध किया कि वे 10-15 दिन वहां रह कर भिक्षुओं को सिखायें। उन्होंने भिक्षु संघ से कहा, "सब लोग ध्यान से सुनो। यह उपासक मेरा परम शिष्य ऊ फो तै है। दक्षिण बर्मा से आया है। यह मेरी ही भांति ध्यान सिखाने में समर्थ है। तुम में से जो कोई ध्यान साधना करना चाहे, इनसे सीखे। दायक (=जो भिक्षुओं के भोजन, वस्त्र, दवा जैसी आवश्यकताओं का दायित्व लेता है।) तुम मेरे स्थान पर धम्म का जय केतु फहराओ। यह काम मेरे ही विहार से प्रारंभ करो।"

तदनन्तर ऊ तैजी ने पच्चीस शास्त्रविद् भिक्षुओं को विपस्सना साधना सिखायी। तभी से वे '**सया तैजी**' के नाम से जाने जाने लगे, ('सया' का अर्थ आचार्य है।)

लैडी सयाडो ने सया तैजी को अपनी जगह धम्म सिखाने के लिए प्रोत्साहित तो कर दिया, परंतु अपने सैद्धांतिक ज्ञान में अपूर्णता को लेकर सया बड़े हतोत्साहित थे। लैडी सयाडो की अनगिनत रचनाओं में से कुछ तो उन्हें कंठस्थ थीं और वे शास्त्रों के अनुसार धम्म की व्याख्या इस प्रकार करने में सक्षम थे कि कोई विद्वान सयाडो (भिक्षु आचार्य) भी विरोध न कर सके। और फिर, लैडी सयाडो के आदेश पर उनके स्थान पर धम्म की शिक्षा देना एक पवित्र कर्तव्य था। तथापि सया तैजी आशंकित थे। श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उन्होंने अपने गुरु से कहा, "आपके शिष्यों में मैं ही शास्त्रों को बहुत कम जानता हूं। आपके आदेशानुसार विपस्सना सिखाने के द्वारा 'सासन' की सेवा एक नाजुक और कठिन कार्य है। इसलिए भदंत, मेरा यह अनुरोध है कि जब भी मुझे स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो, आप अपनी सहायता और मार्गदर्शन दें। कृपया मुझे आप अपना सहारा दें और जब भी जरूरत पड़े, मुझे डांटें भी।"

लैडी सयाडो ने यह कहते हुए आश्वासन दिया-- "मैं अपनी मृत्यु के समय भी तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।"...

क्रमशः.... *(सयाजी ऊ बा खिन जरनल से साभार)*

पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथियों पर वृहत् संघदान का आयोजन

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिसर में आगामी **14 जनवरी**, 2018 को पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के अवसर पर प्रातः 10 बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोन नं. 022-62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org

प्राथमिक पालि अभ्यास कार्यक्रम

दि. 7 अप्रैल से 22 मई, 2018, योग्यता-- 3 10-दिवसीय शिविर, एक सतिपट्ठान शिविर तथा आचार्य की अनुमति के अतिरिक्त 12वीं कक्षा पास होना चाहिए। स्थान-- परियत्ति भवन, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराई. आवेदन-पत्र हेतु निम्न शृंखला का अनुसरण करें-- http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses या फोन करें- 022-62427560 (9:30AM to 5:30PM), E-mail: mumbai@vridhamma.org

वि. पगोडा के समीप 'धम्मालय' में निवास-सुविधा

जो साधक पवित्र बुद्ध-धातुओं और बोधिवृक्ष के सान्निध्य में रह कर गंभीर साधना करने के इच्छुक हों उनके लिए पगोडा के बगल में बने '**धम्मालय अतिथि-गृह**' में निवास की उत्तम सुविधा उपलब्ध है। रात्रि में पगोडा की भव्यता और प्रभा-मंडल दर्शनीय होता है। धम्मालय में 34 कमरे दो विस्तरों के हैं और 2 सुइट (कमरों के सेट) भी। कमरों के साथ चाय, नाश्ता, भोजनादि की भी सुविधा है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए निम्न पते पर **संपर्क** करें— श्री महेश मोदी, फोन- 022-62427599, 8291894645 एवं ईमेल— info.dhammalaya@globalpagoda.org

आगामी 14 जनवरी के एक-दिवसीय महाशिविर के समय 50% की विशेष छूट दी जा रही है। जो भी साधक चाहें वे 13 से 15 (तीन दिन) तक इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। संभवतः अन्य महाशिविरों के समय भी यह सुविधा उपलब्ध हो सके।

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्रीमती राजिन्दर नागपाल, पुणे
2. श्री मंगेश जोशी, नाशिक

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री लिंगामुर्थी पलासू, आंध्रप्रदेश
2. श्री भीष्म प्रसाद सुबेदी, काठमांडू
3. श्री ज्ञान दर्शन उदास, काठमांडू
4. श्रीमती पुष्पा लमसाल, काठमांडू
5. श्री शिवराम वाघ, भुसावल
6. श्रीमती वंगीशा नरावडे, औरंगाबाद
7. श्री विनोदकुमार वतनी, औरंगाबाद
8. श्री विनोद बेलखेडे, पुणे
9. श्री विलास शिंदे, पुणे
10. श्री अशोक सिंगापुरे, ठाणे
11. श्री वल्लभनेनी, ब्रह्म वारा प्रसाद, आंध्रप्रदेश
12. श्रीमती नलिनी मेश्राम, गोंदिया
13. श्री जिमीडे भास्कर, तेलंगाना

बाल-शिविर शिक्षक

1. कु. सुषमा पवार, पालघर
2. श्री अतुल वासनिक, भंडारा
3. श्री विजय कानिंदे, यवतमाल
4. श्री धम्मदीप धकाड़े, गडचिरोली
5. श्रीमती प्रीती कोरडे, नागपुर
6. श्रीमती रेखा रामटेके, नागपुर
7. कु. शुभ्रा कुलश्रेष्ठ, नागपुर
8. कु. जया गैधने, नागपुर
9. श्रीमती अंजुश शेंडे, चंद्रपुर
10. Ms Marie Christine Veeran, France
11. Mr Guy Mullens, Netherlands

Registered No. NSK/235/2015-2017

विपश्यना पगोडा परिसर में वृहत् संरक्षण-गृह की योजना

पगोडा परिसर में एक बड़े अभिलेखागार या संरक्षण-गृह (Digital Archives Center) की योजना पर काम चल रहा है जिसमें पूज्य गुरुजी ने जब से काम शु डिग्री किया तब से लेकर आज तक के सभी प्रकार के आलेख, टिप्पड़ियां (नोट्स), पुस्तकें छायाचित्र (फोटो), कथानक (ऑडियो), चलचित्र (वीडियो), विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा किये गये सभी प्रकार के शोधकार्य, विपश्यना पगोडा संबंधी फोटोज, नक्शे व अन्य संबंधित दस्तावेज आदि का समावेश होगा।

यह कार्य कई वर्षों तक चलता रहेगा। कार्यारंभ करने के लिए हमें अनेक कम्प्युटर, स्कैनर, प्रिंटर आदि के साथ सभी प्रकार के सामान रखने के समुचित स्थान और इस पूरी परियोजना का संचालन करने वाले कार्यकर्ताओं के वेतन आदि का भी ध्यान रखना है। प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लगभग पच्चीस लाख का खर्च आयेगा, तथा वेतनादि के लिए लगभग 15-20 लाख वार्षिक लगेंगे।

"विपश्यना विशोधन विन्यास" का रजिस्ट्रेशन सेक्शन 35 (1) (3) के अंतर्गत हुआ है, जिससे दानदाताओं को 125 प्रतिशत आयकर की छूटप्राप्त होगी। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512/ 62427510; Email: audits@globalpagoda.org; Bank Details of VRI -- 'Vipassana Research Institute', Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No. - 911010004132846; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा

प्रत्येक वर्ष "विश्व विपश्यना पगोडा", गोराई- बोरीवली (मुंबई) में एक दिवसीय महाशिविरों का आयोजन होता रहता है। उनमें शामिल होने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-विश्राम की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना है कि पगोडा-परिसर में अलग से एक 3-4 मंजिला भवन का निर्माण किया जाय जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आने वाले साधकों के लिए कुछ एकाकी और कुछ सामूहिक निवास की व्यवस्था की जा सके ताकि रात्रि-विश्राम के बाद वे सुबह आराम से उठ कर भली प्रकार साधना का लाभ उठा सकें। तदर्थ जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे संपर्क करें:- 1. Mr. Derik Pegado, or 2. Sri Bipin Mehta, (*details as in Archives Center*). Email: audits@globalpagoda.org

---

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में 2018 के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार, 14 जनवरी, 2018 पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में-- समयः प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3-4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और *समग्गानं तपो सुखो*- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥

गहन निशा वन भटकते, हुआ विकल गुमराह।
सहज सिखाया धरमपथ, गुरु ने पकड़ी बांह॥

धन्य भाग! गुरुवर मिले, करुणा के भंडार।
अंधे को आंखें मिलीं, सत्य धरम का सार॥

निर्मल निर्मल धर्म का, जो भी पालक होय।
नमन करें उस संत का, किसी जाति का होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

सुख दुख दोन्यूं हाथ मँह, समझ नासमझ मांय।
समझ हुयां सुख नीपजै, नासमझ्यां दुख पाय॥

छोड़ अविद्या आंधळी, ढूंढ धरम रो दीप।
जन जन मन जाग्रत करै, प्रग्या ग्यान प्रदीप॥

ग्यान और विग्यान रो, भर्‌यो घणो भंडार।
आत्मग्यान बिन ग्यान सब, बणग्यो सिर को भार॥

बाहर बाहर खोजतां, मिलै न साचो ग्यान।
प्रग्या तो भीतर मिलै, भीतर ही निरवाण॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2561, आश्विन पूर्णिमा, 5 अक्टूबर, 2017

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 21 September, 2017, DATE OF PUBLICATION: 5 October, 2017

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org